'डिजिटल युग में इस्पात संयत्र के प्रबन्धकों का सूचना खोज व्यवहार : भिलाई, राउरकेला एवं दुर्गापुर इस्पात संयत्रों के विशेष संदर्भ में'

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर , छत्तीसगढ

में कला के संकाय के अंतर्गत

ग्रंथालय एवं सूचना विज्ञान अध्ययन शाला में

पी–एच.डी. उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोधकार्य की रूपरेखा

शोध निर्देशिका

डॉ. (श्रीमती) माया वर्मा

प्रोफेसर

ग्रंथालय एवं सूचना विज्ञान अध्ययनशाला

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय

रायपुर (छ.ग.)

शोध छात्रा

मेघा ठाकुर

ग्रंथालय एवं सूचना विज्ञान अध्ययनशाला

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय

रायपुर (छ.ग.)

शोध केन्द्र

ग्रंथालय एवं सूचना विज्ञान अध्ययनशाला

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

(2014)

शोध कार्य का शीर्षक

''डिजिटल युग में इस्पात संयत्र के प्रबन्धकों का सूचना खोज व्यवहार : भिलाई, राउरकेला एवं दुर्गापुर इस्पात संयत्रों के विशेष संदर्भ में ''

प्रस्तावना :–

आधुनिक युग में अनुसंधान का विशेष महत्व है क्योंकि अनुसंधान का प्रयोग ज्ञान की प्रत्येक शाखा में गहन अध्ययन के लिए होने लगा है। अनुसंधान में नवीन तथ्यों की खोज की जाती है तथा सत्यों का प्रतिपादन किया जाता है। विज्ञान के क्षेत्र में आश्चर्य जनक प्रगति के कारण नवीन तकनीकी यंत्रो के सभी क्षेत्रों में एक क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है।

अनुसंधान एक व्यवस्थित तथा सुनियोजित प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानवीय ज्ञान में वृद्धि की जाती है और मानव जीवन को सुगम तथा भावी बनाया जाता है। अनुसंधान कार्यो द्वारा उन प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास किया जाता है जिनका उत्तर साहित्य में उपलब्ध नहीं है। उन समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयत्न किया जाता है जिनका समाधान उपलब्ध नहीं है।

औद्योगिक क्रान्ति के बाद आज विश्व सूचना क्रान्ति की ओर बढ़ रहा है विभिन्न क्षेत्रों के बौद्धिक क्रियाकलापों में दिन प्रतिदिन सूचना निर्भरता बढ़ती जा रही हैं। प्रौद्योगिक उन्नति ने सूचना को ऊर्जा एवं शक्ति का एक आधारभूत स्त्रोत बना दिया हैं सूचना शक्ति जो किसी देश के विकास एवं प्रगति में आवश्यक भूमिका का निर्वाह करती हैं इसलिए यह आवश्यक हैं कि सभी प्रकार की सूचनाओं का अर्जन करके उन्हे व्यवस्थित कर सही उपयोगकर्ताओं तक पहुॅंचाया जाय जिससे उनका अधिकतम उपयोग हो सके। ऐसा करने के लिए उपयोगकर्ता की सूचना सम्बन्धी आवश्यकताओं का सही आकलन करना होगा, क्योंकि सूचना सम्बन्धी क्रियाकलापों के लिए यही एक प्राथमिक आधार है। पाठकों की सूचना आवश्यकताओं का पूर्ण निर्धारण करना किसी भी सूचना प्रणाली में प्रभावशाली सूचना सेवा का प्रावधान करने के लिए

नितान्त आवश्यक है। पाठकों की सूचना आवश्यकताएं भिन्न – भिन्न हो सकती हैं अतः सावधानीपूर्वक उनकी सूचना आवश्यकताओं का आंकलन करना जरूरी है। इसी प्रसंग में उपयोगकर्ताओं की सूचना प्रवृति (Information Behaviour) सूचना खोज प्रवृति (Information seeking Behaviour – I.S.B.) तथा सूचना आवश्यकताओं की प्रकृति एवं प्रकार का अध्ययन करना आवश्यक हैं। जिससे सूचनाओं के संग्रहण (Storage), संगठन (Organisation) एवं प्रसार विकसित किया जा सके।

वर्तमान युग सूचना विस्फोट का युग है। सूचना की मांग प्रतिदिन बढ़ रही है। सूचना का व्यवस्थापन और प्रबन्धन करना वर्तमान युग में महत्वपूर्ण कार्य बन गया है। वर्तमान समय में डिजिटल युग सूचना प्रदान करने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। डिजिटल युग में सूचना शीध्रता से प्राप्त की जा सकती है तथा सूक्ष्म से सूक्ष्म बिन्दु पर सूचना पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। डिजिटल युग में सूचना के संचार तथा स्थानान्तरण की प्रक्रिया सरलता से होती है। सूचना वह महत्वपूर्ण तथ्य है जो निरंतर विकास को गतिशीलता प्रदान करती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में डिजिटल युग में इस्पात संयंत्रों के प्रबंधको की सूचना आवश्यकता एवं सूचना खोज प्रवृति जानने का प्रयास करेगें। इस हेतु तथ्यों का संग्रहण भिलाई इस्पात संयत्र, राउरकेला इस्पात संयत्र तथा दुर्गापुर इस्पात संयत्र द्वारा किया जायेगा।

उपलब्ध साहित्यों की समीक्षा :–

किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है, जिस पर भावी कार्य आधारित होता है। यदि संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण के द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारा कार्य प्रवाहहीन एंव महत्वहीन होने की संभावना है अथवा पुनरावृत्त भी हो सकता है।

वैज्ञानिक अध्ययन में समस्या चयन करने के पश्चात् यह आवश्यक हो जाता है कि समस्या से संबंधित तथ्यों पर पूर्व में जो संबंधित शोध कार्य किए गये है उनके निष्कर्षों का प्रयोग अपने शोध के विषय में समस्या समाधान के लिए किया जाये।

Muneera N. Ansri (2007) ''पाकिस्तान के कराची में जनसंचार अभ्यार्थियों की सूचना आवश्यकता एंव सूचना खोज व्यवहार'' पर अध्ययन में बताया कि एक व्यक्ति को सूचना की आवश्यकता तब पड़ती है जब उसका ज्ञान अपर्याप्त हो या किसी विषय का ज्ञान कम हो। जब किसी उपयोगकर्ता को सूचना की आवश्यकता होती है तब वह संतुष्टि के लिए ग्रंथालय या व्यक्तिगत स्त्रोंत से संपर्क करता है। ये क्रियाएं ही किसी व्यक्ति की सूचना खोज व्यवहार को बनाता है। जनसंचार अभ्यार्थि वह होता है जो जनसंचार माध्यम जैसे रेडियो, टी.वी. आदि के सदयस्य होते है जो सूचना प्रलेखीय स्त्रोंतो से प्राप्त करते है।

Sara Mita (2009) एक ऑनलाइन वेब आधारित सर्वे किया जो क्वाजुल–नाटाल विश्वविद्यालय के चिकित्सा अकादमी के सूचना आवश्यकता एंव सूचना खोज व्यवहार पर आधारित था। इस सर्वेक्षण द्वारा 72 से लेकर 286 उत्तर प्राप्त हुआ। ये सूचना खोज के अनेक क्षेत्रों को दर्शाती है। इस अध्ययन से यह पाया गया कि चिकित्सा अकादमी के प्रदर्शित व्यवहार का अध्ययन भी अन्य अध्ययनों के ही समान है और इससे यह सुझाव प्राप्त हुआ कि सेवा की असंतुष्टि का कारण समय की बाध्यता हो सकती है। इस अध्ययन से यह पता भी चलता है कि पुस्तकालय सेवा के प्रचार प्रसार के लिए चिकित्सा अकादमी के विकास तथा प्रशिक्षण के लिए प्रलेखी स्त्रोत का उपयोग किया जा रहा है।

Mumtaza A. Anwar एंव Muhammd A. Sghar (2009) ''पाकिस्तान में लाहौर के पत्रकारों का सूचना खोज व्यवहार'' पर अध्ययन किया। इसमें स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग कर 87% वास्तविक सूचनाएं प्राप्त की गई। सूचना प्राप्ति हेतु अनेक औपचारिक तथा अनौपचारिक स्त्रोतों का उपयोग किया गया। अभ्यार्थियों द्वारा प्रथामिक सूचना स्त्रोत, व्यक्तिगत संग्रहण स्त्रोत तथा दैनिक डायरी को सबसे अधिक महत्व दिया गया। महाविद्यालयों में इंटरनेट के इलेक्ट्रानिक पुस्तकालयों की सामग्री क्षमता तथा उपयोगिता बहुत सीमित है।

सूचना तथा कौशल की कमी उनके विकास में एक समस्या है। यदि उनकी इच्छानुसार कार्य तथा प्रशिक्षण दिया जाए तो यह एक महत्वपूर्ण विचार होगा इन्हें प्रलेखी स्त्रोतों से प्राप्त किया जा सकता है।

Nikam Khaiser एवं Manjunathaj (2013) ''केन्द्रीय रेशम उत्पादन शोध एंव प्रशिक्षण संस्थान मैसूर, (भारत) के वैज्ञानिकों की सूचना आवश्यकता तथा सूचना खोज व्यवहार के प्रभाव के अध्ययन'' में डाटा संग्रहण के लिए प्रश्नावली विधि का प्रयोग किया गया था। कुल 110 रेशम उत्पादक वैज्ञानिकों को प्रश्नावली वितरित किया गया, जिसमें 105 प्रश्नावली 95. 45% से उत्तर प्राप्त किया। यह शोध दर्शाता है कि अधिकतर वैज्ञानिक कम्प्यूटर के उपयोग और सूचना संग्रहण की सुविधाओं से जागरूक है और वे पत्रिकाओं में लेख की प्रिंट कॉपी को सबसे अधिक महत्व देते है। सूचना के इलेक्ट्रानिक प्रसार का प्रभाव वैज्ञानिकों की सूचना खोज के बारे में पिछले पाँच साल के उपयोग की तुलना में बहुत अलग है। वैज्ञानिकों के लिए सूचना को उनके क्षेत्र में उपयोग करने के लिए इंटरनेट काफी लाभदायक एवं पर्याप्त रहा है। लगभग 72.2% वैज्ञानिक रोजाना 30 मिनट से 1 घंटे का समय पुस्तकालय सामग्री को ढूढ़ने में व्यतीत करते है एंव 67.67% वैज्ञानिक पुस्तकालय सेवाओं से संतुष्ट है।

Md.Shariful Islam एवं S.M. Ahamed (2012) ग्रामीण समुदाय के निवासियों की सूचना आवश्यकता तथा सूचना खोज व्यवहार पर शोध किया। विकासशील और विकसित देशों में ग्रामीण निवासियों के सूचना आवश्यकता तथा सूचना खोज व्यवहार के विश्लेषण से यह पता चलता है कि सभी देशों के ग्रामीण समुदायों में सूचना की जरूरत बराबर है। यद्यपि अलग–अलग देशों में ग्रामीण समुदाय अपनी सामाजिक अर्थव्यवस्था पर निर्भर करते है ग्रामीण समुदाय की अधिकतर जरूरतें उनकी रोजमर्रा की जिन्दगी से जुड़े होते है।

Gboyege Adio एवं Adesoji Arinola (2012) Lodoke Akirtota University of Technology in Ogbomor, Nigevia में भर्ती हुए कृषि संबंधी विद्यार्थियों की सूचना आवश्यकता तथा सूचना खोज व्यवहार पर केन्द्रित है। इस लेख का तर्क है कि सूचना खोज

व्यवहार तथा सूचना स्त्रोतों से प्राप्त सूचना में महत्वपूर्ण अंतर हो सकता है। सूचना और उपयोगकर्ता के सूचना खोज व्यवहार के स्त्रोत उपयोगकर्ता के चुनैती से संबंधित है। जिसमें पुस्तकालय से प्राप्त सूचना की गुणवत्ता बढ़ेगी।

Sara L.Wimberley और Jessical L. (2012) प्रकाशित अपने लेख अमेरिका के सुपरमार्केट के ऐतिहासिक घटनाक्रम की समीक्षा के शुरूआत के साथ किराना दुकानदारों की सूचना खोज व्यवहार का अध्ययन करता है। समय के साथ किराना दुकानदारों और सुपरमार्केट में नाटकीय रूप से बदलाव आया है और सूचना के लिए उपभोक्ता मांग को पूरा करने के क्रम में विकसित व्यापार प्रथाओं में भी बदलाव आया है। दुकानदारों की सूचना पुनःप्राप्ति, सूचना खोज, सूचना एकत्रित एवं अर्जित करने के व्यवहार में बड़ी मात्रा में सूचना स्त्रोतों के रूप में उपयोग लाया गया।

Md. Arman Hussain एवं Md. Shariful Islam (2012) प्रकाशित अपने अध्ययन राशही, बांगलादेश के प्रिंट मीडिया पत्रकारों की सूचना खोज व्यवहार पर केंद्रित है। इसका प्रयत्न यह जानना है कि सफल पत्रकार कैसे सूचनाओं की खोज करते है और कौन से सूचना स्त्रोतों को महत्व देते है। इंटरनेट का उपयोग सूचना स्त्रोत के रूप में सबसे ज्यादा होता है। यह अध्ययन यह भी पता लगाता है कि पुस्तकालयों एंव सूचना केन्द्र से किस तरह से पत्रकारों को किस प्रकार की सूचना की जरूरत पड़ती है। इस लेख का सुझाव है कि पत्रकारिता से संबधित विद्यालयों को अपने पाठ्यक्रम में सूचना व्यवहार, सूचना के प्रकार, सूचना स्त्रोत के विभिन्न प्रकारों, सूचना प्राप्ति सूचना खोज के तरीकों आदि को सम्मिलित करना चाहिए।

Adam Gambo Saleh and Ahamed Bakeri Abu Bakar (2013) नाइजीरिया में Ulma उपदेश और परामर्श देने की भूमिका के लिए सूचना खोज व्यवहार का अध्ययन किया। पिछले कुछ वर्षों में सूचना खोज व्यवहार के अध्ययन ने सूचना व्यवासायी को आर्कषित किया है। इस अध्ययन में निम्नलिखित प्रश्नों का उपयोग करते है जैसे कि परामर्श देने के लिए सूचना की खोज कैसे करते है। वो कौन सी रणनीति का उपयोग करते है। क्या जनसांख्यिकी

कारक और सूचना मांग ढ़ाचे में क्या संबंध है। यह अध्ययन सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का उपयोग करता है तथा डेटा एकत्र करने के लिये प्रश्नावली का उपयोग किया गया जो कि वर्णात्मक और आधुनिक सांख्यिकीय पर आधारीत थी। यह अध्ययन जनसांख्यिकीय कारक तथा खोज रणनीति के बीच महत्वपूर्ण संबंध स्थापित करता है। अतः ईसाई पादरी और Ulama के सूचना खोज व्यवहार की समानताओं और असमानताओं को पहचानता है।

उद्देश्य :–

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे उद्देश्यों का बहुत महत्व है। बिना उद्देश्य कोई भी कार्य निर्जीव तथा अर्थहीन होता है। बिना उद्देश्य शोध कार्य महत्वहीन हो जाता है। हर क्षेत्र में उद्देश्य स्पष्ट होने के साथ आवश्यक है कि प्रत्येक कार्य को करने का कोई न कोई प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष उद्देश्य हो जो कार्य करने हेतु प्रेरित करे। जिस प्रकार एक लेखक किसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु लेख लिखता है ठीक उसी प्रकार अनुसंधानकर्ता किसी विशेष उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अनुसंधान कार्य करता है। अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य एक समस्या से संबंधित नवीन सिद्धांतो का प्रतिपादन नवीन तथ्यों की खोज, नवीन सत्यों का प्रतिस्थापन होता है।

1. इस्पात संयत्र के प्रबंधको द्वारा उपयोग किये जा रहे संचार तकनीकी, सूचना चैनलो तथा सूचना स्त्रोंतों को ज्ञात कर तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना।
2. इस्पात संयत्र के प्रबधंको की सूचना आवश्यकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. इस्पात संयत्र के प्रबन्धक अपनी आवश्यकता से संबंधित सूचना प्राप्त करने के लिए किन–किन डिजिटल साधनों का प्रयोग करते है को ज्ञात करना।
4. इस्पात संयत्र के प्रबन्धकों को दी जा रही सूचना सेवाओं से संतुष्टि के स्तर को ज्ञात करना।
5. इस्पात संयत्र के प्रबन्धकों द्वारा सूचना खोज व्यवहार में आने वाली समस्याओं को ज्ञात कर करना।

6. प्रबन्धकों द्वारा डिजिटल संसाधनों के उपयोग के उद्देश्य व महत्व के संबंध में जानकारी प्राप्त करना।
7. प्रबन्धकों द्वारा इंटरनेट पर सूचना को खोजने के लिए प्रयुक्त सर्च इंजन ज्ञात करना।
8. प्रबन्धकों द्वारा सूचना के उपयोग में आने वाली समस्याओं को ज्ञात करना एवं उसके समाधान के उपायों का पता लगाना।

शोध कार्य में ध्यान देने योग्य योगदान :–

Selda Ekici और Nazan Ozenc Ucak (2012) तुर्क के प्राथमिक शाला के विद्यार्थियों का इंटरनेट सूचना खोज व्यवहार पर अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य यह पता लगाना है कि प्राथमिक शालाओं के विद्यार्थियों का इंटरनेट और इंटरनेट सूचना खोज व्यवहार के प्रति क्या सोच है। इस अध्ययन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दो विद्यालयों के विद्यार्थियों को चुना है। जिसमें एक शासकीय विद्यालय तथा दूसरा निजी विद्यालय है। कुल 149 विद्यार्थियों को प्रश्नावली दी गई यह अध्ययन विद्यार्थियों के निम्नलिखित गुणों की जाँच करती है :– कम्प्युटर और इंटरनेट उपयोग करने की कला, सूचना की जरूरत और सूचना खोज व्यवहार, सूचना प्राप्त करने में आने वाली समस्या एवं स्त्रोतो की सही उपयोगिता।

यह परिणाम दर्शाता है कि प्राथमिक शालाओं के विद्यार्थि सूचना प्राप्ति के लिए इंटरनेट को प्राथमिकता देते है। वह यह भी समझते है कि इंटरनेट कि इंटरनेट विद्यार्थि को अद्यतन रखने में तथा सूचना प्राप्त करने में लाभदायक है। लेकिन यह नहीं मानते कि अपने गृहकार्य में उपयोग में आने वाली सूचना के लिये हमेंशा इंटरनेट का उपयोग करना पडता है।

Dimitris A Dervas, Yen Z hung और Li Wu (2012) में ''इंटरनेट में शोधकर्ताओं की सूचना आवश्यकता और सूचना खोज व्यवहार : एक अध्ययन'' विषय पर अध्ययन किया है। इसमें साक्षात्कार विधि का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में पाया गया कि इंटरनेट से सूचना खोजने के लिए वेब, ईमेल, डिजिटल पुस्तकालय, ऑनलाइन पुस्तकालय सूची, ई पत्रिका आदि का प्रयोग किया जा रहा है। इंटरनेट के युग में पारंपरिक सूचना पारंपरिक

सूचना प्रबंध एक बडी चुनौती है। इंटरनेट के माध्यम से सूचना अधिक सरलता से प्राप्त हो जाती है।

Xuemei Ge (2010) ने ''डिजिटल यूग में सूचना खोज व्यवहार : अकादमिक शोध कर्ताओं का अध्ययन'' विषय पर अध्ययन किया। यह अध्ययन इलेक्ट्रानिक सूचना संसाधन समाजिक और मानविकि में सूचना खोजने की प्रक्रिया के प्रभाव पर केंद्रित है। इस में विद्‌वानों का सूचना खोज व्यवहार छ विशेषताओं को दर्शाता है। यह अध्ययन टेनिस स्टेट यूनिवर्सिटी में आयोजित किया तथा इलेक्ट्रानिक सूचना साधनों के प्रयोग के बारे में बातचीत की गई। साक्षात्कार के आधार पर अनुसंधानकर्ता वर्तमान सूचना सेवाओं और उत्पादों को बेहतर करने के लिए सुधार किया जा सकता है पर सुझाव दिया है। लेखक विद्‌वानों की जरूरतों को पूरा करने के लिये पुस्तकालय सेवा प्रौद्योगिकी में सुधार करने की सिफारिशें करता है।

शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन डिजिटल युग में इस्पात संयत्र के प्रबन्धकों के सूचना खोज व्यवहार का अध्ययन किया जायेगा इसके लिए भिलाई, राउरकेला एवं दुर्गापुर इस्पात संयत्रों का चुनाव किया गया है। शोध अध्ययन के लिए निम्नलिखित चरणों का प्रयोग करेगें :–

1. सर्वप्रथम समस्या का चयन करेगें।
2. समस्या चयन के बाद पूर्व में हुए शोध कार्य से संबंधित साहित्यों का अध्ययन किया जाएगा।
3. समस्या जो शोध कार्य में लिया है उसका उद्‌देश्य ज्ञात करेगें।
4. उद्‌देश्य ज्ञात करने के बाद शोध क्षेत्र ज्ञात करेगें जिसे अध्ययन क्षेत्र में शामिल करना है। इस शोध अध्ययन में भिलाई, राउरकेला एवं दुर्गापुर इस्पात संयत्रों को लिया गया है।

5. भिलाई, राउरकेला एवं दुर्गापुर के प्रबंधकों की डिजिटल युग में सूचना खोज व्यवहार की जानकारी प्राप्त की जायेगा। इसके लिए प्रश्नावली तैयार करके उनसे प्राथमिक आँकडों की जानकारी प्राप्त की जाएगी।
6. प्रबंधकों से जानकारी प्राप्त करनें के लिए रैण्डम सैम्पलिग विधि का प्रयोग किया जायेगा।
7. आँकडों के संकलन के बाद उनका वर्गीकरण, सारणीयन विश्लेषण तथा काई वर्ग परीक्षण किया जायेगा।
8. विश्लेषण के आधार पर शोध अध्ययन के निष्कर्ष तक पहुचेगें।
9. निष्कर्ष के आधार पर सूझाव प्रस्तुत किया जायेगा।

समय एवं साधनो को ध्यान में रखते हुए अध्ययन विषय के अंतर्गत निम्नलिखित संयत्र हैः—

- भिलाई इस्पात संयत्र (छ.ग.),
- राउरकेला इस्पात संयत्र (उड़ीसा)
- दुर्गापुर इस्पात संयत्र (कोलकाता)

के प्रबन्धकों के सूचना खोज व्यवहार का अध्ययन किया जाएगा प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रबन्धकों की सूचना आवश्यकता किस प्रकार की है, उपयोग विधि कैसी है, सूचना स्त्रोत कौन से है, सूचना सेवाओं से संतुष्टि है या नहीं अथवा सूचना प्राप्ति में किस प्रकार की समस्या आती है आदि का अध्ययन किया गया है।

अपेक्षित परिणाम :—

- भिलाई,राउरकेला एवं दुर्गापुर इस्पात संयंत्र के प्रबंधकों को सूचना खोजने के लिए समय की कमी की समस्या का सामना करना पडता है।

- भिलाई,राउरकेला एवं दुर्गापुर इस्पात संयंत्र के प्रबंधक सूचना आवश्यकता की पूर्ति के लिए परम्परागत, प्रलेखी और डिजिटल सूचना संसाधनों पर निर्भर रहते है।
- अधिकांश प्रबंधक सूचना आवश्यकता को प्राप्त करने के लिए डिजिटल वातावरण के साथ परिवर्तन कर रहें है।
- भिलाई, दुर्गापुर एवं राउरकेला इस्पात संयंत्र के प्रबन्धकों के इंटरनेट उपयोग करने के उद्‌देश्य में समानता है।
- भिलाई, दुर्गापुर एवं राउरकेला इस्पात संयंत्र के प्रबन्धकों की डिजिटल सूचना आवश्यकता के स्त्रोतों में संबंध है।

शोध कार्य की रूपरेखा :–

शोधकार्य को मुख्य रूप से निम्नानुसार अध्यायीकरण किया जाऐगा :–

अध्याय 0 – भूमिका

अध्याय 1 – सम्बन्धित साहित्यों की समीक्षा

अध्याय 2 – शोध प्रविधि

अध्याय 3 – इस्पात संयत्र के ग्रंथालय

अध्याय 4 – सूचना आवश्यकता एंव सूचना खोज व्यवहार

अध्याय 5 – आंकडों का तुलनात्मक विश्ले ाण

अध्याय 6 – नि क ा एवं सुझाव

परिशि ट

संदर्भ–ग्रंथ–सूची

BIBLOGRAPHY

- वोहरा, वंदना. ''रिसर्च मैथ्डोलॉजी''. नई दिल्ली : ओमेगा पब्किेशन्स 2009,1– 32.
- आहुजा, राम. ''समाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान''. जयपुर : रावत पाब्लिकेशन्स, 2005. 37–58.
- राय, पारसनाथ. ''अनुसंधान परिचय''. आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, 2007. 25–31.
- कपिल, एच. के. ''अनुसंधान विधियां''. आगराः एच पी भार्गव बुक हाउस, 2004. 104–118.
- शरीन एवं शरीन '' शैक्षिक अनुसंधान विधियां''. आगराः विनोद पुस्तक मंदिर, 2007. 26–28.
- शर्मा, वीरेन्द्र प्रकाश. ''रिसर्चमेथडॉलॉजी''. जयपुर : पंचशीलप्रकाशन, 2001. 485–495.
- त्रिपाठी, एस.एम. ''प्रलेखन एवं सूचना सेवाएं तथा नेटवर्क''. आगरा : वाई.के. पब्लिशर्स, 2004. 367–374.
- सूद, एस.पी. ''प्रलेखन एवं सूचना विज्ञान''. जयपुर : राज पब्लिशिंग हाउस, 1994. 17–18, 39–40.
- तिलवानी, टी.डी. ''सूचना खोज प्रवृत्ति के आदर्श : एक विहंगावलोकन''. ग्रंथालय विज्ञान 38.1/2, (2007). 56–65.
- Kumar, P.S. G. "Rescarch Methods and statical Technigues".Delhi : B. R. publishing , 2004,262-271.
- Sqravanavel, P. "Research Methodology".Alohobad : Kital Mahal, 2007.31- 48.
- Kapil , H. K. "Rescarh Method". Agra: Bhargav Book House, 2004. 142- 146.
- Sriastave, G.H. "Advaced Researh Methodology". Delhi:Radha Publihingnouse, 2001. 175- 192.
- Verma, R.K. "Research Methodolgy". Delhi: Commnwelth Publication, 1999. 16-24 .
- Sing, yogesh kumar. "Fundamenental of Research Methodology" . New Delhi: age intenational Publisher, 2006. 112- 121.

- Sharma, K. R. "Research Methodology". New Delhi: National Publishing House, 2002. 400-403.

- Prasad,H.N. "Information Need & User". Varanasi : Indian Bibliographic centre, 1991. 1-13, 27-45.

- Laloo, Bikika Tariang. "Inforamtion Need Information Seeking Behaviour and Users". New Delhi : Ess Ess Publication. 1-22.

- Kumar, P.S.G. "Library and User". New Delhi : B.R. Publish Corporation. 2004. 156-158.

- Srivastava, G.H. "Advanced Research Methodology". Delhi : Radh Publication House, 2001, 175-92.

- Singh Yogesh Kumar. "Fundamental of Research Methodoloyg" New Delh : New age international Pub., 2006. 112-21.

- Parmar, Arvin. "Informtion seeking Behaviour elated Literature". JLIS 29. 1&2 (2004) : 54-61.

- Rani, Poonam. "Information seeking Behaviour of teachers and students in select school". Library Herald 47.1 (2009) : 23-59.

- Shama, Yogita. "Information Literacy inIndia Agricultural Univerusites " : Astudy of Punjab Agricultural University." Library Herald 46. 4 (2010) : 346-57

- Kumar, P.S.G."Research method and statistical techniques. Delhi : B.R.Publishing, 2002. 479-483.
- Kothari, C.R. "Research methodology" : method and technique". 2nd ed. New Delhi : Wiley eastern, 1990. 1-29.
- Kanaujia, Lalet and Walia, PK. "Public Library in Delhi satisfying Information need of their users. Library Herald 46. 3(2008) : 173-82.
- Gupta, Santosh. "Research methodology and statistical technique". New Delhi : Deep and Deep Pub., 1993. 1-50.

प्रकाशित लेख :–

डॉ. (श्रीमती) माया वर्मा, मेघा ठाकुर, प्रति रानी मिश्रा ''भिलाई इस्पात संयत्र के प्रबन्धकों का सूचना खोज व्यवहार : एक अध्ययन''. UGC & DRDO SPONSORED GOLDEN JUBILEE NATIONAL SEMINAR ON RE-ENGINEERING ACADEMIC LIBRARIES(2014):263-268.

मेघा ठाकुर '' सूचना आवश्यकता एवं सूचना खोज व्यवहार''. शोध प्रकल्प, LXVII (2014):149–153.

Signature of the Supervisor

Signature of the Candidate

30/1/15

Chairmn,DRC

HEAD,
School of Studies in Library & Information Science
Pt. Ravishankar Shukla University,
RAIPUR (C. G.)